



Karamate Hazrate Ma'roof Karahi (Hindi)

एकमात्र प्रकाश : 300
Weekly Booklet : 300

मुसलमानों के लिए अल्लिख्य कुरानिख्य रज्जिख्य अख्खरिख के
एक अख्खीम कुतुब का तल्लिख बखाम

करामाते ہجرتہ ما روف کرخی

رسالة الله عليه

संख्या 20

अख्खीम कुतुब
हज्जते मा 'रुफ़ करखी



गाला विलों से भर गया 01

मा 'रुफ़ करखी ॐ की दुआएं 13

ऊंट की बीमारी दूर हो गई 06

इज्जत पूरी करने वाले कल्लिमात 15

पेशाकश :

मजल्लिसे अल्ल मदीनतुल इल्लिख्य (द'खे इस्लामी इन्डिया)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
इं شَاءَ اللهُ عَلَيْهِ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी
रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (मुस्तफ़ज़फ़ ज १, ४०, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ
व मग़िफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : करामाते हज़रते मा 'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

सिने त़बाअत : ज़िल हज़ 1444 हि., जूलाई 2023 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इल्लिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला “करामाते हज़रते मा 'रूफ़ कर्खी' رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(तारीख़ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

करामाते हज़रते मा 'रूफ़ कर्खी

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 18 सफ़हात का रिसाला :
 “करामाते हज़रते मा 'रूफ़ कर्खी” पढ़ या सुन ले उसे सिल्सिलए
 कादिरिय्या के बुजुर्गाने दीन के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमा और उस की बे
 हिसाब बख़िश कर दे ।

امين بجاہ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी
 صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक
 पढ़ेगा, अल्लाह पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देगा कि येह
 शख़्स निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे क़ियामत के दिन
 शुहदा के साथ रखेगा ।

(مجم اوسط، 5/252، حدیث: 7235)

صَلُّوا عَلٰى الْحَبِيْب ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

गल्ला पैसों से भर गया

एक बुजुर्ग़ रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अपने भाई की आटे की दुकान पर गए और
 भाई को सलाम कर के वहीं बैठ गए । सलाम का जवाब देने के बा'द उन
 के भाई ने कहा : भाईजान ! आप यहां बैठिये और मेरी दुकान का ख़याल
 रखियेगा, मैं एक ज़रूरी काम से फ़ारिग़ हो कर आता हूं । वोह बुजुर्ग़
 रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ दुकान पर बैठे थे कि उन्होंने ने बाज़ार में कुछ ग़रीब लोगों को देखा ।

बुजुर्ग ने उन्हें बुलाया और आटा बांटना शुरू कर दिया, यहां तक कि दुकान में मौजूद सारा आटा उन में तक्सीम कर दिया। जब उन के भाई आए और यह सूखते हाल देखी तो पूछ : आटा कहां गया ? बुजुर्ग ने फ़रमाया : वोह तो मैं ने ग़रीबों में तक्सीम कर दिया। येह सुन कर वोह कहने लगा : भाईजान ! आप ने तो मुझे कंगाल कर दिया है। भाई की येह बात सुन कर वोह बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ उठे और मस्जिद में जा कर इबादते इलाही में मशगूल हो गए। भाई ने जब गल्ला (पैसे रखने का बक्स) खोल कर देखा तो हैरान रह गया कि वोह तो दिरहमों से भरा हुवा है। हिसाब लगाया तो पता चला कि एक दिरहम के बदले सत्तर दिरहम का नफ़ा हो गया। वोह दिल में कहने लगा : येह सब मेरे भाई की बरकत से हुवा है। चन्द दिन बा'द वोह भाई बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पास आया और सलाम किया। सलाम का जवाब देने के बा'द पूछ : भाई कैसे आना हुवा ? उस ने कहा : भाईजान ! कल आप मेरी दुकान पर कुछ देर के लिये तशरीफ़ लाएं तो येह मेरे लिये सआदत की बात होगी। बुजुर्ग ने फ़रमाया : तुम येह बात इस लिये कह रहे हो कि उस दिन तुम्हें बहुत ज़ियादा नफ़ा हुवा था। अब मैं तुम्हारी दुकान पर नहीं आऊंगा और हर मरतबा ऐसे मुआमलात नहीं होते, इस में मेरा कोई कमाल नहीं।

(عیون الحکایات، ص 198)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

أَمِين بِحَاهِ خَاتِمِ التَّيْبِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ आशिक़ाने औलिया ! आप को मा'लूम है वोह बुजुर्ग जिन्हों ने अपने भाई की दुकान का सारा आटा ग़रीबों में तक्सीम कर दिया और उन

की बरकत और करामत से दुकान का गल्ला पैसों से भर गया वोह कौन थे ? वोह अज़ीम हस्ती मशहूर बुजुर्ग हजरते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ थे । आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का मुबारक नाम “मा'रूफ़ बिन फ़ीरोज़ कर्खी” है, आप की दुआएं अक्सर क़बूल हुवा करती थीं, आप मशहूर सूफ़ी और बड़े परहेज़ गार बुजुर्ग हैं । हजरते सरी सक़ती رَضِيَ اللهُ عَنْهُ आप के शागिर्दों में से हैं, आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने 200 हि. में वफ़ात फ़रमाई, आप का मज़ार “बग़दाद शरीफ़” में दरियाए दिज्ज़ा के बाएं किनारे अपनी बरकतें लुटा रहा है, आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की क़ब्रे अन्वर के वसीले से लोग (बीमारियों से) शिफ़ा हासिल करते हैं, अहले बग़दाद कहा करते थे : आप का मज़ारे अक्दस (हुसूले शिफ़ा और क़बूलिय्यते दुआ का) मर्कज़ है ।

(رساله قشیریه، ص 26-الاعلام للزرکلی، 7/269-وفیات الاعیان، 4/445-446)

आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की इज़ज़तो अज़मत और शानो शौकत का अन्दाज़ा आप के इन वाक़िआत से बख़ूबी लगाया जा सकता है, चुनान्चे

बग़दाद के बड़े अ़लिम

हजरते क़ारी इस्माइल बिन शद्दाद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान करते हैं : हजरते सुफ़यान बिन उयैना رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने हम से पूछा : आप लोगों का तअल्लुक कहां से है ? हम ने कहा : बग़दाद से । फिर पूछा : उस हिब्र (या'नी बड़े अ़लिम) का क्या हुवा ? हम ने पूछा : कौन ? इर्शाद फ़रमाया : मा'रूफ़ कर्खी । फिर फ़रमाया : जब तक वोह आप लोगों में मौजूद हैं आप लोग हमेशा खैर के साथ रहेंगे । (طایفه الاولیاء، 8/410، رقم: 12714)

ज़मीनो आस्मान में शोहरत

हजरते उबैद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक शख्स मुल्के शाम से हजरते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ को सलाम करने के लिये हाज़िर हुवा, लोगों ने उस

से इस की वजह पूछी तो उस ने बताया : मैं ने ख़्वाब में देखा कि मुझ से कहा जा रहा है : मा'रूफ़ के पास जाओ और उन्हें सलाम करो क्यूं कि वोह ज़मीन वालों में भी मा'रूफ़ हैं और आस्मान वालों में भी मा'रूफ़ हैं । (या'नी इन का वली होना ज़मीन वालों और आस्मानों के फ़िरिश्तों में मशहूर है ।)

(حلیۃ الاولیاء، 8/409، رقم: 12708)

महबबते इलाही से सरशार

हज़रते अब्दुल्लाह अन्सारी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ बयान करते हैं : मैं ने हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ को ख़्वाब में देखा, गोया आप अर्श के साए में हैं और अल्लाह पाक फ़िरिश्तों से फ़रमा रहा है : ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! येह कौन है ? फ़िरिश्तों ने अर्ज की : तू ज़ियादा जानता है । येह हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ हैं और इन्हें तेरी महबबत का ऐसा नशा चढ़ चुका है जो तेरी मुलाकात ही पर ख़त्म होगा ।

(حلیۃ الاولیاء، 8/410، رقم: 12715)

ऐसा गुमा दे उन की विला में खुदा हमें ढूंडा करे पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

(हदाइके बख़्शाश, स. 130)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ साहिबे करामत बुजुर्ग थे, आप से बहुत सी करामात ज़ाहिर हुई । आइये ! आप की चन्द करामात⁽¹⁾ पढ़ते हैं :

①... करामत की ता'रीफ़ : अल्लाह पाक के वली से जो ख़िलाफ़े अ़ादत बात सादिर हो । (बहारे शरीअत, 1/58, हिस्सा : 1 ब तग़य्युरे क़लील) ख़िलाफ़े अ़ादत बात से मुराद वोह काम है जो अ़ाम तौर पर हर किसी इन्सान से ज़ाहिर न होता हो मसलन हवा में उड़ना, पानी पर चलना वग़ैरा अफ़अल कि अ़ाम तौर पर आदमी न तो हवा में उड़ सकता है और न ही पानी पर चल सकता है । याद रखिये ! करामत का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) गुमराह है ।

(बहारे शरीअत, 1/269, हिस्सा : 1)

﴿1﴾ खोया हुआ बेटा मिल गया

हजरते अबू मुहम्मद जरीर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का बयान है कि मेरे पड़ोसी हजरते मर्दवयह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने मुझे अपने पास आने का पैगाम भेजा, मैं आया तो आप ने बताया कि कई दिनों से मेरा बेटा ला पता है और औरतों के रोने धोने की वजह से मैं बड़ा परेशान हूँ, आप सुब्ह मुझे हजरते मा'रुफ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के पास ले जाएं। चुनान्चे मैं और वोह सुब्ह के वक़्त मस्जिद में हजरते मा'रुफ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की खिदमत में हाज़िर हुए, सलाम दुआ के बा'द हजरते मा'रुफ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने पूछा : ऐ अबू बक्र ! कैसे आना हुवा ? हजरते मर्दवयह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! मेरा बेटा कई दिनों से गाइब है और औरतों के रोने की वजह से मैं बहुत परेशान हूँ। हजरते मा'रुफ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने तीन मरतबा येह दुआ की :
 يَا عَالِمًا بِكُلِّ شَيْءٍ وَيَأْمَنُ لَا يَخْفَى عَلَيْهِ شَيْءٌ وَيَأْمَنُ عَلَيْهِمْ مُحِيطٌ بِكُلِّ شَيْءٍ أَوْضَحَ لَنَا أَمْرَ ذَا الْعُلَامِ
 या'नी ऐ हर शै का इल्म रखने वाले ! ऐ वोह ज़ात जिस से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ! ऐ वोह हस्ती जिस का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है ! हम पर इस लड़के का मुआमला ज़ाहिर कर दे। फिर हम आप के पास से आ गए। हजरते अबू मुहम्मद जरीर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : अगले दिन सुब्ह फ़ज़्र की नमाज़ से पहले हजरते मर्दवयह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का कासिद (पैगाम पहुंचाने वाला) मुझे बुलाने के लिये आया, मैं ने उस से पूछा : क्या ख़बर है ? उस ने बताया कि लड़का आ चुका है, जब मैं पहुंचा तो मैं ने देखा कि बच्चा हजरते मर्दवयह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के सामने बैठा है। हजरते मर्दवयह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने मुझे से कहा कि एक तअज्जुब ख़ैज़ बात सुनो, इस बच्चे ने बताया : मैं कूफ़े में चल रहा था कि दो शख्स मेरे पास आए और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे कूफ़े

से बाहर ले आए और मुझे से कहा : अपने घर की तरफ़ चलो, मैं रास्ते में न कहीं बैठा हूँ, न मैं ने कुछ खाया पिया है हालां कि मैं 9 कूओं या 90 कूओं के करीब से गुज़रा हूँ, मुझे खाना दो, आप लोगों के पास पहुंचने तक मैं ने कुछ नहीं खाया है।

(حلیة الاولیاء، 8/406، رقم: 12696)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

أَمِينِ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿2﴾ ऊंट की बीमारी दूर हो गई

एक मरतबा हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के पास एक शख़्स आया, उस के साथ एक ऊंट भी था। वोह आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से कहने लगा : येह मेरा ऊंट है, मेरे घर के अपराद काफ़ी हैं और इसी के ज़रीए हमारा गुज़र बसर होता है। मैं इस पर मेहनत मज़दूरी करता हूँ और इसी पर सुवार हो कर अपने घर वालों के पास आता हूँ और येह तीन दिन से बीमार है। आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने उस से फ़रमाया : तुम क्या चाहते हो ? उस ने अर्ज़ की : मैं चाहता हूँ कि आप अल्लाह पाक से मेरे लिये दुआ करें। आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने लोगों से फ़रमाया : अपने भाई के लिये अल्लाह पाक से दुआ करो कि अल्लाह इस से मुसीबत दूर कर दे। आप ने हाथ उठाए फिर आप ने दुआ की। देखते ही देखते ऊंट की बीमारी दूर हो गई। (مناقب معروف الكرخي، ص 160، بتیور قلیل)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

أَمِينِ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿3﴾ शराबियों की तौबा

हज़रते इब्राहीम अतरूश رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : हम बग़दाद शरीफ़ में दरियाए दिज्ला के किनारे हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के हमराह बैठे

हुए थे कि कुछ नौ जवान दफ़ बजाते, शराब पीते और खेलकूद करते हुए एक छोटी कश्ती में हमारे पास से गुज़रे। लोगों ने हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से अर्ज़ की : क्या आप इन्हें देख रहे हैं कि किस तरह खुले आम अल्लाह पाक की ना फ़रमानी कर रहे हैं ? आप इन के लिये बद दुआ कीजिये। आप ने हाथ उठाए और दुआ की, कि ऐ अल्लाह पाक ! जिस तरह तू ने इन्हें दुनिया में खुशी बख़्शी है इसी तरह आख़िरत में भी खुश करना। लोगों ने अर्ज़ की : हम ने तो आप से बद दुआ करने का कहा था। आप ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह पाक इन्हें आख़िरत की खुशियां अता फ़रमाएगा तो (मरने से पहले) इन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे देगा। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि वोह नौ जवान शराबो रबाब फेंक कर आप की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और आप के हाथ पर बैअत कर के बुरे कामों से तौबा कर ली। इस के बा'द आप ने अपने साथियों से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया : तुम ने देखा कि किसी के ग़र्क़ हुए और तकलीफ़ पहुंचे बिग़ैर ही हमें हमारी मुराद हासिल हो गई।

(احياء العلوم، 4/190- تذكرة الاولياء، 1/242 طحطا)

अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

امين بجاہِ خاتمِ التّيبينِ صلى الله عليه وآله وسلم

करम हो वासिता कुल औलिया का मेरा ईमां पे मौला ख़ातिमा हो

(वसाइले बख़्शाश, स. 316)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

ऐ अशिक़ाने औलिया ! हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के इस वाक़िए से हमें येह दर्स मिलता है कि नफ़रत गुनाह से होनी चाहिये न कि गुनहगार से। अगर आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ उन के लिये बद दुआ फ़रमा देते तो वोह

हलाक हो जाते और उन की आखिरत बरबाद हो जाती, लेकिन आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने उन के लिये हिदायत की दुआ फ़रमाई और आप की दुआए ख़ैर की बरकत से वोह गुनाहों से तौबा कर के सीधे रास्ते पर आ गए। हमें भी चाहिये कि किसी के लिये हरगिज़ हरगिज़ बद दुआ न करें कि हदीसे पाक में इस से मन्अ किया गया है, चुनान्वे **अल्लाह** पाक के आखिरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम न अपने आप को बद दुआ दो, न अपनी औलाद को बद दुआ दो और न अपने अम्वाल को बद दुआ दो, कहीं ऐसा न हो कि येह वोह घड़ी हो जिस में **अल्लाह** पाक से जिस अता का भी सुवाल किया जाए तो वोह दुआ क़बूल होती हो। (7515: حدیث: 1226, مسلم)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

❀❀❀ 4❀❀ मुश्किल हल हो गई

हज़रते क़ारी अबुल हज़्जाज رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मेरे यहां बच्चे की विलादत हुई, मेरे पास कुछ भी नहीं था, मैं ने इस बारे में हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से अर्ज़ की तो आप ने फ़रमाया : ऐ भाई ! **अल्लाह** पाक से दुआ करो, चुनान्वे वोह दुआ करते जाते और मैं आमीन कहता जाता और जब मैं दुआ करता तो वोह आमीन कहते, जब दुआ का सिल्लिसला तवील हुवा तो मैं उठा और चुपके से बाहर आ गया, अचानक मैं ने देखा कि एक सुवार मुझे पीछे से आवाज़ दे रहा है, उस के पास पैसों की एक थेली थी। उस ने मुझ से कहा : हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने आप से कहा है कि इस थेली को उस काम में खर्च करो जिस का आप ने उन से ज़िक्र किया था और उस थेली में सो दीनार या इस के क़रीब क़रीब थे।

(12698: رقم، 407/8، حلیة الاولیاء،) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़ि़रत हो। أَمِينٌ بِجَاهِ حَاتِمِ التَّيْبِيِّنِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

रब्बे करीम की रिज़ा में राज़ी

हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के एक दीनी भाई ने एक बार आप की दा'वत की। आप ने एक नेक शख़्स का हाथ पकड़ा और उसे दा'वत में ले आए। जब उस नेक शख़्स ने अन्वाओ अक्साम की चीज़ें देखीं तो उसे बुरा लगा और उस ने कहा : ऐ अबू महफूज़ ! क्या आप यहां नहीं देख रहे ? आप ने फ़रमाया : मैं ने इन लोगों को इन चीज़ों के ख़रीदने का हुक़म नहीं दिया। जब उस ने हल्ला देखा तो कहा : **سُبْحَانَ اللهِ** ! ऐ अबू महफूज़ ! क्या आप यहां नहीं देख रहे ? आप ने फ़रमाया : मैं ने इन को इस के बनाने का हुक़म नहीं दिया। फिर जब उस ने मुख़लिफ़ किस्म की मिठाइयां देखीं तो कहा : क्या आप यहां नहीं देख रहे ? आप ने फ़रमाया : तुम ने मुझ से बहुत सारे सुवालात कर लिये, मैं तो एक समझदार गुलाम हूं, मेरा आका जो मुझे खिलाता है मैं खा लेता हूं, जहां मुझे मेरी मेहमानी के लिये ठहराता है वहां ठहर जाता हूं।

(12699: رقم، 407/8، حلیة الاولیاء،)

लम्बी उम्मीद नेक अमल में रुकावट

एक दिन हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने नमाज़ के लिये इक़ामत कही। फिर हज़रते मुहम्मद बिन अबी तौबा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : आगे बढ़ कर हमें नमाज़ पढ़ाइये। इस की वजह येह थी कि आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ इमामत नहीं कराते थे, बल्कि सिर्फ़ अज़ानो इक़ामत कहते थे जब

कि इमामत कोई और करता था। हज़रते मुहम्मद बिन अबी तौबा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने अर्ज़ की : अगर मैं आप को यह नमाज़ पढ़ाऊं तो दूसरी नमाज़ की इमामत नहीं करूंगा। यह सुन कर आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम दूसरी नमाज़ की उम्मीद करते हो ? हम लम्बी उम्मीदों से अल्लाह करीम की पनाह त़लब करते हैं क्यूं कि यह बेहतरीन अमल से रोक देती हैं।

(طیبة الاولیاء، 8، 405، حدیث: 12688)

अल्लाह पाक पर भरोसा करो

हज़रते मुहम्मद बिन मस्लमा यामी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान करते हैं : हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने एक शख्स से फ़रमाया : अल्लाह पाक पर भरोसा करो यहां तक कि वोही तुम्हारा मुअल्लिम (सिखाने वाला), वोही तुम्हारा अनीस (महबूबत करने वाला) और तुम्हारी अर्ज़ियां उसी की बारगाह में पेश हों और मौत की याद तुम्हारे साथ ऐसे हो कि तुम से कभी जुदा न हो। जान लो कि जो भी आजमाइश व मुसीबत तुम पर नाज़िल हो उस से छुटकारा उस को छुपाए रखने में है क्यूं कि लोग तुम्हें न फ़ाएदा दे सकते हैं, न नुक़सान पहुंचा सकते हैं, न तुम से कुछ रोक सकते हैं और न ही तुम्हें कुछ दे सकते हैं।

(طیبة الاولیاء، 8/404، حدیث: 12683)

तिजारत की तरगीब

हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते बक्र बिन ख़ुनैस رَضِيَ اللهُ عَنْهُ को फ़रमाते हुए सुना कि ख़रीदो और बेचो अगर्चे कीमते ख़रीद ही पर हो क्यूं कि उस माल में भी ऐसे ही बरकत होती है जैसे ज़राअत में नश्वो नमा होती है।

(طیبة الاولیاء، 8/408، حدیث: 12704)

अल्लाह की मा'रिफ़त काफ़ी है

किसी शख्स ने हजरते मा'रुफ़ कर्खी ﷺ से अर्ज़ की : “ऐ अबू महफूज़ ! मुझे बताइये कि आप को किस चीज़ ने मख़्लूक से अ़लाहदगी और इबादते इलाही पर उभारा ?” आप ﷺ ख़ामोश रहे तो उस ने खुद ही कहा : मौत की याद ने ? आप ﷺ ने फ़रमाया : “मौत क्या चीज़ है ?” उस ने कहा : क़ब्र और बरज़ख़ की याद ने ? आप ﷺ ने फ़रमाया : “क़ब्र क्या शै है ?” फिर उस ने कहा : जहन्नम के ख़ौफ़ और जन्नत की उम्मीद ने ? तो आप ﷺ ने फ़रमाया : “येह क्या चीज़ है ? बेशक येह तमाम चीज़ें एक बादशाह के क़ब्ज़े में हैं, अगर तू उस से महबूबत करे तो वोह तुझे सब कुछ भुला दे और अगर तेरे और उस के दरमियान जान पहचान हो जाए तो वोह तुझे इन तमाम के मुक़ाबले में काफ़ी हो जाए ।”

(احیاء العلوم، 5/22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रामीने हजरते मा'रुफ़ कर्खी ﷺ

ऐ आशिक़ाने औलिया ! हजरते मा'रुफ़ कर्खी ﷺ ने जहां अपनी सीरतो किरदार के ज़रीए लोगों की इस्लाह फ़रमाई वहीं अपने पाकीज़ा फ़रामीन से भी लोगों की ज़िन्दगियों में इन्क़िलाब पैदा फ़रमाया, चुनान्चे आप फ़रमाते हैं :

❀ “दुन्या चार चीज़ों का नाम है : ❶ माल ❷ कलाम ❸ सोना और ❹ खाना । क्यूं कि माल सरकशी (ना फ़रमानी) का सबब है, कलाम लहवो लइब (या'नी खेलकूद) में मुब्तला कर देता है, नींद गाफ़िल कर देती है और खाना दिल की सख़्ती का बाइस है ।” (तबक़ाते औलिया, स. 285)

❁ रब्बे करीम की ना फ़रमानी करते हुए रहमत की उम्मीद लगाना जहालत और हमाक़त है ।
(حلیة الاولیاء، 8/411، رقم: 12718 ملقطاً)

❁ ऐ मिसकीन ! तू कब रोएगा और कब समझदार बनेगा ? मुख़्लिस बन और छुटकारा हासिल कर ।
(حلیة الاولیاء، 8/411، رقم: 12718 ملقطاً)

❁ मुशिकल घड़ी में जिस चीज़ की हाज़त हो उसे ईसार कर देना सख़ावत है ।
(حلیة الاولیاء، 8/411، رقم: 12718 ملقطاً)

❁ सिर्फ़ एक ख़राब लुक़्मा बा'ज़ अवक़ात दिल की कैफ़ियत को इस क़दर तबाह कर देता है कि फिर सारी उम्र दिल राहे रास्त (या'नी सीधे रास्ते) पर नहीं आता ।

❁ बा'ज़ अवक़ात वोही ख़राब लुक़्मा साल भर तक तहज्जुद की ने'मत से आदमी को महरूम कर देता है ।

❁ बा'ज़ अवक़ात एक बार बद निगाही करने वाला अ़सें तक तिलावते कुरआने करीम की सअ़ादत से महरूम कर दिया जाता है ।

(منہاج العابدین، ص 97 ملقطاً)

❁ बन्दे का बे फ़ाएदा कलाम करना अल्लाह पाक की मदद से महरूम की अ़लामत है ।
(حلیة الاولیاء، 8/405، رقم: 12691)

❁ अल्लाह पाक फ़रमाता है : मेरे बन्दों में मुझे सब से ज़ियादा महबूब वोह मसाकीन हैं जिन्हों ने मेरा फ़रमान सुना और मेरा हुक्म माना और मेरे ज़िम्मे उन का ए'जाज़ येह है कि मैं उन्हें दुन्या न अ़ता करूं ताकि वोह (दुन्या से बे ऱबत रह कर) मेरी इबादत की तरफ़ मुतवज्जेह रहें ।

(تهذيب الآثار للطبری، 2/301، رقم: 510)

❁ हजरते मा'रुफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से पूछा गया : दुनिया को दिल से कैसे निकाला जाए ? इर्शाद फ़रमाया : ख़ालिस महबूबत और अच्छे मुआमले के ज़रीए और ख़ालिस महबूबत की तीन अ़लामतें हैं : **❶** वफ़ा बिग़ैर किसी ख़ौफ़ो ख़तर के हो **❷** अ़ता बिग़ैर सुवाल के हो **❸** ता'रीफ़ बिग़ैर जूदो सखावत के हो और औलिया की तीन अ़लामतें हैं : **❶** उन के इरादे और अफ़कार अल्लाह पाक के लिये होते हैं **❷** उन की मसरूफ़ियत अल्लाह पाक के लिये होती है और **❸** वोह हर चीज़ से दामन छुड़ा कर अल्लाह पाक की तरफ़ दौड़ते हैं ।
(حلیة الاولیاء، 8/411، رقم: 12718، مطبوعاً)

❁ जिस ने अल्लाह पाक पर भरोसा किया तो वोह उसे नफ़अ देगा और जिस ने उस के लिये अ़जिज़ी की तो वोह उसे बुलन्द रुत्बा अ़ता फ़रमाएगा ।
(سیر اعلام النبلاء، 8/218، رقم: 1425)

❁ जब अल्लाह पाक किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये अ़मल का दरवाज़ा खोल देता है और जब अल्लाह पाक किसी बन्दे के साथ बुराई का इरादा फ़रमाता है तो उस के लिये अ़मल का दरवाज़ा बन्द कर देता है ।
(سیر اعلام النبلاء، 8/217، رقم: 1425)

❁ लम्बी उम्मीद नेक और अच्छे काम से रोक देती है ।

(حلیة الاولیاء، 8/408، حدیث: 12703)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

मा'रुफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की दुआएं

हजरते मा'रुफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की दुआओं में येह दुआ भी थी :
(ऐ अल्लाह पाक!) हमें उन लोगों में से बना दे जो तुझ से मुलाकात पर

ईमान रखते हैं, तेरे फैसले पर राजी रहते हैं, तेरे दिये हुए पर खुश रहते हैं और तुझ से ऐसे डरते हैं जैसे डरने का हक़ है। (12687: 405/8, 8/405, 8/405) (12687: 405/8, 8/405)

हजरते मा'रुफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ इस तरह दुआ किया करते थे :

“اللَّهُمَّ يَا مَنْ وَفَّقَ أَهْلَ الْخَيْرِ لِلْخَيْرِ وَأَعَانَهُمْ عَلَيْهِ وَفَقَّنَا لِلْخَيْرِ وَأَعَانَنَا عَلَيْهِ”
पाक! ऐ वोह जात जिस ने नेक बन्दों को नेक कामों की तौफ़ीक़ दी और इस पर उन की मदद भी फ़रमाई! हमें भी भलाई की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और इस पर हमारी मदद भी फ़रमा।” (الروض الغائق، ص 185)

मा'रुफ़ कर्खी के अवरदो वज़ाइफ़

ऐ अशिक़ाने औलिया ! हमारे बुजुगानि दीन का येह दस्तूर रहा है कि वोह अपने मुरीदीन व मुतअल्लिकीन को मसाइब व अमराज़ से नजात, रिज़क़ में बरकत और दीगर अहम उमूर से मुतअल्लिक़ अवरदो वज़ाइफ़ अता फ़रमाते हैं। हजरते मा'रुफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने भी वक़तन फ़ वक़तन अपने मुरीदीन को अवरदो वज़ाइफ़ अता फ़रमाए हैं, चुनान्वे

अब्दालों की फ़ज़ीलत हासिल करने का वज़ीफ़ा

हजरते मा'रुफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ाना 10 मरतबा येह कलिमात “اللَّهُمَّ أَصْلِحْ أُمَّةَ مُحَمَّدٍ اللَّهُمَّ فَرِّجْ عَنْ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ اللَّهُمَّ أَرْحَمْ أُمَّةَ مُحَمَّدٍ” या'नी ऐ अल्लाह! उम्मतें मुहम्मदिय्यह की इस्लाह फ़रमा, इन की तकलीफ़ें दूर कर दे और इन पर रहूम फ़रमा।” कहेगा, उसे अब्दालों में लिख दिया जाएगा। (12716: 410/8, 8/410) (12716: 410/8, 8/410)

हजरते मा'रुफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने बैतुल्लाह शरीफ़ से रुख़सत होते हुए कहा : اللَّهُمَّ لَكَ الْحُسْدُ عَدَدَ عَفْوِكَ عَنْ خَلْقِكَ : या'नी ऐ

अल्लाह ! तेरे लिये इतनी ता'दाद में हम्द हो जितनी ता'दाद में तू अपनी मख़्लूक को मुअ़ाफ़ करता है। फिर जब आइन्दा साल वोह शख़्स दोबारा आया और येही कलिमात कहे तो उस ने एक आवाज़ सुनी कि पिछले साल जब से तुम ने येह कलिमा कहा था उस वक़्त से हम इस (के सवाब) को नहीं गिन सके।

(حلیة الاولیاء، 8/410، حدیث: 12717)

हाजत पूरी करने वाले कलिमात

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अन्सारी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान करते हैं : मैं ने हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ को फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स अपने बिस्तर से अ़लाहदा होते वक़्त येह कलिमात कहे :
 “سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرُ اللَّهُ إِلَيْنِي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ”
 या'नी अल्लाह पाक है और तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं अल्लाह से मग़िफ़रत मांगता हूँ। ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़ल और तेरी रहमत का सुवाल करता हूँ येह दोनों तेरे कब्जे में हैं, तेरे सिवा कोई इन का मालिक नहीं।”
 तो अल्लाह करीम बन्दों की हाजतें पूरी करने पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते या'नी हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से इर्शाद फ़रमाता है : ऐ जिब्रील ! मेरे बन्दे की हाजत पूरी कर दो।

(حلیة الاولیاء، 8/410، حدیث: 12718)

हज़रते या'कूब बिन अब्दुरहमान رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते मुहम्मद बिन हस्सान رَضِيَ اللهُ عَنْهُ को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि मुझे हज़रते मा'रूफ़ कर्खी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें दस ऐसे कलिमात न सिखाऊँ कि जिन में से पांच दुन्या और पांच आख़िरत के

लिये हैं, जो भी इन कलिमात से अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ करता है इन्आमाते बारी तअ़ाला पाता है।" मैं ने अर्ज़ की, कि इन्हें तहरीर फ़रमा दें, तो उन्होंने ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं ! मैं तहरीर नहीं करूंगा बल्कि मैं भी इसी तरह बार बार तुम्हें पढ़ कर सुनाऊंगा जैसा कि हज़रते बक्र बिन हुबैश رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने मुझे सुनाए थे।" वोह कलिमात येह हैं :

❁ حَسْبِيَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى لِيَدِينِي، حَسْبِيَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ لِدُنْيَايَ، حَسْبِيَ اللهُ الْكَرِيمُ لِمَا أَهَمَّنِي، حَسْبِيَ اللهُ الْحَكِيمُ الْقَوِيُّ لِمَنْ بَغَى عَلَيَّ، حَسْبِيَ اللهُ الشَّدِيدُ لِمَنْ كَادَنِي بِسُوءٍ، حَسْبِيَ اللهُ الرَّحِيمُ عِنْدَ الْمَوْتِ، حَسْبِيَ اللهُ الرَّؤُوفُ عِنْدَ الْمَسْئَلَةِ فِي الْقَبْرِ، حَسْبِيَ اللهُ الْكَرِيمُ عِنْدَ الْحِسَابِ، حَسْبِيَ اللهُ اللَّطِيفُ عِنْدَ الْمِيزَانِ، حَسْبِيَ اللهُ الْقَدِيرُ عِنْدَ الصِّرَاطِ، حَسْبِيَ اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ۔

तरजमा : मुझे मेरे दीन के मुआमले में अल्लाह पाक ही काफ़ी है, मुझे मेरी दुन्या के मुआमलात में भी अल्लाह पाक ही काफ़ी है, जिन बातों ने मुझे गमज़दा कर दिया है उन में भी मुझे करीम अल्लाह ही काफ़ी है, मुझ पर सरकशी इख़्तियार करने वाले के मुआमले में भी मुझे हिक्मतो कुव्वत वाला अल्लाह पाक ही काफ़ी है, जो मुझे धोका व फ़रेब देना चाहे उस के मुआमले में भी मुझे शिद्दतो ताक़त वाला अल्लाह पाक ही काफ़ी है, मौत के वक़्त भी मुझे रहूम फ़रमाने वाला अल्लाह पाक ही काफ़ी है, क़ब्र में सुवाल जवाब के वक़्त भी मुझे अल्लाह पाक ही काफ़ी है जो कि रऊफ़ है, हिसाब के वक़्त भी मुझे करम फ़रमाने वाला अल्लाह पाक ही काफ़ी है, मीज़ान के पास भी मुझे लुत्फ़ो करम फ़रमाने वाला अल्लाह पाक ही काफ़ी है, पुल सिरात से गुज़रते वक़्त भी

मुझे कुदरत वाला अल्लाह पाक ही काफी है, मुझे अल्लाह पाक ही काफी है जिस के सिवा कोई मा'बूद (इबादत के लाइक) नहीं, उसी पर मैं ने भरोसा किया है और वोही अर्शे अज़ीम का मालिक है।

और इस के बा 'द यूँ दुआ करे

اللَّهُمَّ يَا هَادِيَ الْمَضِلِّينَ وَرَاحِمَ الْمُذْنِبِينَ وَمُقِيلَ عَثَرَاتِ الْعَاثِرِينَ ارْحَمْ عَبْدَكَ ذَا الْخَطَرِ الْعَظِيمِ الْمُسْلِمِينَ كُلَّهُمْ أَجْمَعِينَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الْأَحْيَاءِ الْمُرْتُوقِينَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مِنَ التَّابِيِّينَ وَالصَّادِقِينَ وَالشَّهَادَاءِ وَالصَّالِحِينَ أَمِينَ - يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ!

तरजमा : ऐ अल्लाह पाक ! ऐ गुमराहों को हिदायत देने वाले ! और ऐ गुनाहगारों पर रहम फ़रमाने वाले ! ऐ ख़ताकारों की ख़ताएं मुआफ़ फ़रमाने वाले ! ऐ अज़ीम क़द्रो मन्ज़िलत के मालिक ! अपने (इस) बन्दे और तमाम मुसलमानों पर रहम फ़रमा और हमें उन रिज़क़ दिये गए ज़िन्दों में से बना दे जिन पर तू ने इन्आम फ़रमाया या'नी नबियों, सिद्दीकों, शहीदों और नेक लोगों में से। **يا رَبَّ الْعَالَمِينَ !**

मन्कूल है कि हज़रते उ़त्बा गुलाम رحمة الله عليه को ख़्वाब में देखा गया तो उन्होंने ने (दुखूले जन्नत का सबब पूछने पर) बताया कि मैं इन्ही दुआओं की बरकत से जन्नत में दाख़िल हुवा हूँ।

मज़कूरा दुआ के बा 'द येह दुआ मांगे

اللَّهُمَّ عَالِمَ الْخَفِيَّاتِ، رَفِيعَ الدَّرَجَاتِ، ذَا الْعَرْشِ، تُلْقَى الرُّوحَ مِنْ أَمْرِكَ عَلَى مَنْ تَشَاءُ مِنْ عِبَادِكَ، غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ، شَدِيدِ الْعِقَابِ، ذَا الطَّوْلِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ،
إِلَيْكَ الْمَصِيرُ

तरजमा : ऐ अल्लाह पाक ! ऐ मख़्फ़ी व पोशीदा अश्या को जानने वाले ! ऐ दरजात को बुलन्द करने वाले ! ऐ अर्श के मालिक ! रूह तेरे हुक्म से तेरी मन्शा व मरज़ी के मुताबिक़ तेरे बन्दों में डाली जाती है, ऐ गुनाह मुअफ़ करने वाले ! और ऐ तौबा क़बूल फ़रमाने वाली ज़ाते बा बरकात ! ऐ सख़्त अज़ाब के मालिक ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तेरी ही तरफ़ लौटना है ।

हज़रते इब्राहीम साइग़ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : “आप को किस शै के सबब नजात मिली ?” तो आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने बताया कि येही मज़क़ूरा दुआएं मेरी नजात का सबब हैं । (توت القلوب، 1/24)

कल्ले मुखारक
इज्जते मा फलफ कल्ली

